स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

द्वितीय सेमेस्टर

दिनांक - 8-5-2018

MONDAY APRIL 28

14 MAY

1

उपमा एक न नैन गही।

कबिजन कहत खोजि आए सुधि, करि करि काहू न कही॥

कहे चकोर, मुख-बिधु बिनु जीवन, भँवर; न तहँ उड़ि जात।

हरि मुख-कमल कोष बिछुरे तें ठाले क्यों ठहरात?

खंजन मनरंजन जन जौ पै, कबहुँ नाहिं सतरात।

पंख पसारि न उड़त, मंद ह्वै समर समीप बिकात॥

आए बधन ब्याध ह्वै ऊधो, जौ मृग, क्यों न पलाय?

देखत भागि बसैं घन बन में जहँ कोउ संग न धाय॥

ब्रजलोचन बिनु लोचन कैसे? प्रतिछिन अति दुख बाढ़त।

सूरदास मीनता कछू इक, जल भरि संग न छाँड़त॥

व्याख्या:- विद्यार्थियों इस पद में गोपियाँ अपने नेत्रों की विवशता का वर्णन करती हैं, उनका कहना है कि लाख प्रयास कर लिया जाए मेरी आँखों के बारे में प्रचलित उपमा को अनुपयुक्त ही कहा जा सकता है। श्रीकृष्ण के विरह में उनकी आँखों की दशा ऐसी हो गयी है कि उसके बारे में कोई भी उपमा बराबरी नहीं कर सकती। वो कहती हैं कवि जन परंपरा से आँखों के बारे कहते आये हैं यह चकोर के समान होती

2

है परंतु यह उपयुक्त नहीं है क्योंकि चकोर तो चन्द्रमा
को देखकर ही जीवित रहता है परंतु हम लोगों श्रीकृष्ण
मुखचन्द्र के बिना भी अभी तक जीवित हैं। अतः से भ
उनकी तुलना चकोरों की की जाती है। भ्रमर तो
कमलकोष में रात को बन्द हो जाता है क्योंकि उसे कमल
से प्रेम होता है परंतु हम लोगों की आँखें अभी तक
कमल मुख के अदृश्य हो जाने के बाद भी रही हुई
हैं, लगातार आशा लिए उस पथ को निहारे जा रही हैं।

आगे गोपियाँ कहती हैं कि उनकी आँखें खंजन के
सदृश्य भी नहीं है। क्योंकि यह भी स्थिर नहीं रहता है,
हवाओं के रुख के साथ मजबूर होकर उड़ जाता है
परंतु हमारी आँखें तो जहाँ की तहाँ ठहरी हुई
हैं। हमारी आँखें मृगा के समान भी नहीं है
क्योंकि वह तो व्याधे को देखकर या उसकी
आहट सुनकर ही भागकर घने जंगल में अदृश्य
हो जाता है। परंतु उद्धव रूपी व्याधा के सामने
होते भी अभी तक वहीं की वहीं खड़ी है, अतः यह उप

भी रमणीक हो लग रहा है, गोपियाँ अपनी दयनीय दशा के बारे में कहती हैं कि ब्रजनंदन के बिना वे आँखें प्रतिक्षण दुखी हैं, अब हम चाहती हैं कि उनके बिना हम बहते दुख पारावार में ही बहकर मझुधार चली जायें।

अंतिम पंक्ति में गोपियाँ कहती हैं कि मीन के समान इस कुछ मेरी आँखें लगती हैं मानों जैसे मीन अर्थात मछली जल की बिना नहीं जल में ही जीवित रहती है वैसे ही रोते-रोते आँखों में पानी भरा हुआ है जिससे वो आँखें जीवित पा रही हैं। निर्णयात्मक रूप में उनका यही कहना है कि अगर हमलोग जीवित मात्र इसी कारण है नहीं तो आगमन के कब के हमलोगों का जीवन समाप्त हो जाता।

अंत में इसकी विशेषता के बारे में चर्चा करना आवश्यक है। हमने रूपक अलंकार की चर्चा पहले भी किया है इसमें भी कई स्थानों पर रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है।

तीसरी पंक्ति में - मुख-निमु-शब्द आया है, इसमें मुख

01 THURSDAY MAY

4

APR 14

पर शिशु-आर्कांत नेत्रों का निषेध सहित स्थापन किया गया है। दूसरी पंक्ति में 'हरिमुखकमल' में भी वही प्रक्रिया है, इसमें भी रूपक है। रूपक के साथ ही अर्थ चमत्कार भी इसमें उपस्थित किया गया है। इस एक आँख की तुलना कई वस्तुओं, जीवों से की गयी है इसलिए इसके नेत्र विषयक उक्ति भंगिमा है। भिन्नता में परिकरांकुर अलंकार है। इन सबके साथ ही प्रथम पंक्ति में व्यतिरेक अलंकार है, द्वितीय पंक्ति में उपमानों की अनुपयुक्तता का सकारण उल्लेख किया गया है अतः इसमें काव्यलिंग अलंकार है। [illegible] में भी परिकर अलंकार है। मैं समझता हूँ कि परिकरांकुर अलंकार यहाँ क्यों है क्योंकि यहाँ विशेष्य का साभिप्राय किया गया है। जहाँ किसी बात को सिद्ध करने के लिए जहाँ युक्ति अथवा कारण को कथन उसके समर्थन में किया जाता है वहाँ काव्यलिंग अलंकार होता है। जहाँ उपमान की

5

FRIDAY MAY 02

14 JUN

उपमेय को कारण के द्वारा बताया जाय वहाँ व्यतिरेक अलंकार है।

जब विशेष प्रयोजन से विशेषण के द्वारा विशेष्य का कथन किया जाय वहाँ परिकर अलंकार होता है।

(5) सिखाइये इस प्रकार मैं बताऊँ कि इस पद में भी महाकवि सूरदास जी ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है कि वे एक महाकवि हैं।

कुमार रजनीकान्त रंजन
2/5/2020